गुरदयाल सिंह और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोककथाएं एवं लोक रीति-रिवाज

सुनीता देवी
पीएचडी शोधार्थी, हिन्दी विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

शोध-सारांश:
प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य गुरदयाल सिंह और फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में प्रयुक्त लोक कथाओं के द्वारा समाज के ज्ञान, समझ, नैतिक मूल्यों और जानकारी को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे पहुंचाना है। दोनों ही महान कथाकारों ने अपने अपने अंचल में प्रचलित लोक कथाओं के प्रयोग के माध्यम से वहां के लोक की सामाजिक, धार्मिक और नैतिक मानसिकता को उजागर किया है। गुरदयाल सिंह और फणीश्वरनाथ रेणु अपने समय के महान कथाकार हैं। इनकी रचनाएँ आज भी समाज में प्रासंगिक हैं। इनके उपन्यासों में अंचल से संबंधित लोक-कथाएँ एवं लोकरीति-रिवाजों का वर्णन हुआ है। इनके द्वारा रचित उपन्यासों में उल्लेखित पौराणिक, ऐतिहासिक, राजाओं से संबंधित, बुजुर्गों से संबंधित एवं परिवार से संबंधित कथाएँ आज भी पाठक बड़े जिज्ञासा से पढ़ते हैं। इन कथाओं में वर्णित विविध लोकरीति एवं विविध रिवाजों को अभी भी लोग पालन करते हैं। दोनों रचनाकारों के उपन्यासों में वर्णित कथाएं अत्यंत ही लोकप्रिय है।

बीज-शब्द:
लोककथा, लोक रीति-रिवाज, खूबसूरत पक्षी, अंबासीर राजा, सन्त और चेला, रूप बसन्त, नल दमयन्ती, जानी चोर, पूरन भक्त सदाब्रिज, शेखचिलिया, सुवंश, व्रतकथा, भक्तध्रुव, बकरचरवाहा, लड़की का संकल्प, विवाह, घूंघट, माटी

लोककथा किसी मानवसमूह की उस साझी अभिव्यक्ति को कहते हैं जो कथाओं, कहावतों, चुटकुलों आदि अनेक रूपों में अभिव्यक्त होता है। एक ही कथा विभिन्न सन्दर्भों और अंचलों में बदलकर अनेक रूप ग्रहण करती है। लोकगीतों की भाँति लोककथाएँ भी हमें मानव की परम्परागत वसीयत के रूप में प्राप्त है। रिवाज की उत्पत्ति स्थानीय लोक कथाओं, संस्कृति, अन्धविश्वास, रहन-सहन, खान-पान आदि के आधार पर होती है। दरअसल लोगों की जिन्दगी से सम्बन्ध रखने वाला काम रिवाज होता है।

गुरदयाल सिंह के उपन्यासों में लोक कथाएं-

'परसा' उपन्यास में लोककथा : 'परसा' नामक उपन्यास में कुल चार लोककथाओं का प्रतिपादन किया गया है, परसा की तीन पीढ़ियों की लोककथा, साधुराम बुजुर्ग के द्वारा सुनाई गई खुबसूरत पक्षी की कथा, मठनदीप देश के अंबासीर राजा की कथा और सन्त और चेले की कथा। परसे के आस-पास के गाँव के लोग परसे की तीन पीढ़ियों को याद कर तरह-तरह की कथाएं बनाकर तथा बुनकर सुनाते रहते हैं। अधिकतर लोग तो चटखारे लेकर सुनते-सुनाते थे पर बड़ी उम्र के बुजुर्ग इसे 'ब्राह्मणों' के खून की तासीर समझते, गंभीरता से कुछ कहते, सुनते। साधुराम बुजुर्ग के द्वारा सुनाई खूबसूरत पक्षी की कथा परसा नारंग दास नामक सन्त को सुनाते हैं, जिस पक्षी के प्रति रानी की अधिरता व बेचैनी का प्रतिपादन किया गया है, मठनदीप के अंबासीर राजा के पास सन्त का आगमन और खप्पर भर अनाज की मांग, और अनाज न मिलने पर राजा से तीन वचन, तीन वचनों में से अकाल की मंजूरी होना और अन्तिम जिसमें गुरु और चेले की लोककथा है, जिस कथा को सुनकर टिंडी उस पर अमल करते हैं। परसा नामक उपन्यास में एक बार सन्त नारंग दास और परसा आपस में बातें करते हुए एकदम चुप हो गए। नारंग दास को यह चुप्पी बेचैन करने लगी तो नारंग दास ने परसा से कहा कि कोई कथा सुनाओ तो परसा ने कहा सुनो महाराज...हमारे गांव में हमारा एक बुजुर्ग था साधुराम। वह एक कथा सुनाया करता था कि एक पक्षी हुआ करता था जिसकी आँखें काली और सिर सुनहरा था पर चोंच और पंख सुर्ख थे। यह पक्षी संगलदीप के राजमहल के ऊपर से नित्य उसी पल उड़ान भरता जब संगलदीप की महारानी नहा-धोकर राजमहल के ऊपर बाल सुखा रही होती। तब वह चकित हो उसे देखती पर पहचान न पाती कि कौन जाति का पक्षी

है। दूर तक नजर टिकाए देखती तो मन अधिक अशान्त, अधीर होने लगता। जब कुछ दिन बीत गए तो अत्यन्त बेचैन मन से महाराज को बुलाकर पक्षी को दिखाते व्याकुल होकर कहा- 'महाराज अगर यह पक्षी न मिला तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी। तभी राजा ने दरबारियों, मन्त्रियों और बहेलियों को आज्ञा दी पक्षी को पकड़ने के लिए, सभी पक्षी को पकड़ने के लिए दौड़े, परन्तु कोई पकड़ नहीं पाए। कुछ दिन बाद बहेलिया सिर्फ यह पता लगा पाया कि यह पक्षी तभी धरती पर उतरता है जब इसे भूख लगती है, दूसरी बात यह पता चली कि जहां एक बार जाए वहां दूसरी बार कभी नहीं उतरता। बहते पानी की भांति अगली बार कहीं और चला जाता है ऐसी स्थिति में उसे कोई नहीं पकड़ सकता।[1] यहाँ इस उपन्यास में एक खुबसुरत पक्षी की कथा व उस पक्षी की प्राप्ति के लिए रानी की व्याकुलता व अधीरता प्रतिपादित की गई है। टिंडी परसा से जिद्द करने लगा कि बाबा कोई कथा सुनाओ- परसा ने कहा तो सुन - एक देश था मिठनदीप। उस देश का राजा अंबासीर बहुत धर्मात्मा था। आए गए साधु-संत, गुण-ज्ञानी, पण्डित विद्वान का आदर सत्कार किया करता था। एक दिन उसके दरबार में एक जटाधारी साधू आया। राजा ने मर्यादानुसार उसकी आवभगत की और नम्रता से आने का कारण पूछा। सन्त ने कहा कि एक खप्परभर अनाज चाहिए, आशा लेकर दूर से आए हैं तभी राजा ने भंडारी को आज्ञा दी कि साधु को अनाज दिया जाए, सभी ने दातों तले उंगली दबाली कि भण्डार का सारा अनाज खप्पर में डालने से भी खप्पर नहीं भरेगा। सन्त ने कहा कि एक खप्पर भर अनाज तेरे भण्डार से नहीं मिल पाया। तू राजा है, वचन तो निभाना पड़ेगा। अब तेरे सामने तीन रास्ते हैं या तो अनाज का खप्पर भर कर दे। या फिर साढ़े सात पहर की बरसात परवान कर। यह भी ठीक न समझे तो साढ़े सात साल का अकाल स्वीकार कर और चौथा कोई रास्ता नहीं। तभी राजा ने मन्त्रियों से मशवरा किया तो सभी ने यही सलाह दी कि अकाल मंजूर करो। उसके बाद जो दो ढाई साल तब बूंद न गिरी तो अनाज भी सारा खत्म हो गया, पशु-पक्षी व इन्सान सभी मरने लगे तो राजा सारी प्रजा के साथ दक्षिण दिशा चल दिया।[2] टिंडी कालू मजहबी से सुनी हुई एक कहानी बाबा परसे को सुनाने लगे कि बाबा किसी सन्त के चेले ने कहा, 'गुरु जी मेरी मंगनी हो गई। सन्त बोले, तो भाई हमारे काम से गया। कुछ देर बाद चेले ने बताया, 'सन्त जी, मेरा ब्याह हो गया। 'संत बोले, 'अब तू घर वालों के काम से भी गया।' एक साल बाद जब उसने कहा 'गुरु जी, मेरा बच्चा हो गया, तो संत बोले, 'अब तो तू बाई अपने काम से भी गया।' फिर टिंडी ने कहा कि बाबा 'ऐसे झंझट में क्यूं पड़ूं कि अपने आप से भी जाऊं।' अपना पेट तो पूरा नहीं होता, उन्हें क्या खिलाऊंगा। परसा अब हंस नहीं पाया अधिक गंभीर होकर बोला, 'ऐसी बातें तुझे कब से सूझने लगी है।[3] यहाँ पर एक गुरु और चेले की कहानी प्रतिपादित की गई है, साथ ही साथ टिंडी को भी उस कहानी पर अमल करता हुआ दर्शाया गया है।

'परसा' उपन्यास में लोक रीति-रिवाज

'परसा' उपन्यास में तीन रस्मों का प्रतिपादन किया गया है, पहली दाह संस्कार के समय अर्थी के आगे-आगे चिमटा लेकर चलने वाली, दूसरी गंगी के शादी के समय फेरों वाली और लड़की के संकल्प वाली परम्परा और तीसरी शादी से पहले रिश्ता पक्का करने के लिए पोहला जब परसा के पास लड़की के पिता डी.एस.पी. को भेजता है।

'परसा' उपन्यास में जब परसा की पत्नी की मृत्यु हो जाती है, तो फिर उसको दाह संस्कार के लिए लेकर जाते हैं, तब चिमटे वाली परम्परा को निभाते हैं, उसी परम्परा का यहां पतिपादन किया जा रहा है। जब बीरो की मौत हो जाती है, तो उसकी अर्थी जब धर्मशाला के आगे से गुजरती है तो गुरुद्वारे का भाई चिमटा पकड़ आगे-आगे चलने लगता है। पाली रागी हारमोनियम और उसका शिष्य गुरदेव धग्गा भी ढोलक गले में लटकाए साथ चल दिए। पाले रागी ने अपनी स्थिर पर कुछ भारी हो गई आवाज में एक शब्द की धुन उठाई।

'मौत दा बन्ना दिस्से...
जयों दरयावे ढाओ...
मौत दा बन्ने दिस्से।'[4]

यहां पर अर्थी के समय होने वाली लोक रीति-रिवाज की परम्परा को प्रतिपदित किया गया है।

गंगी की शादी के समय उसका स्वास्थ्य खराब हो जाता है, अर्धचेतना में ही लेटी बड़ी-बड़ी डरावनी-सी आँखों से छत्त की और नजर गड़ाए देखने लगती है परन्तु उनके परिवारवालों को उसकी फेरों की रस्म पूरी करनी होती है। घर के बड़े-बुढ़े और दोनों पुरोहित मिलकर मश्वरा करते हैं। फिर वो फेरों की रस्म गुड़ की भेली लाकर उसी के साथ पूरी कर देते हैं, पर उनके मत में संकल्प तो लड़के के हाथों ही

करवाना जरूरी था। जब संकल्प करवाने के लिए पुरोहित भीतर गया तो उसे देखते ही गंगी फिर बेसुध हो गई। गंगी की दोनों भाभियाँ और एक पड़ोसन दंतल खोलने लगी तो बड़ी भाभी की उंगली में दांत गड़ जाने के कारण खून बहने लगा। गंगी के काले पड़ गए ओंठ लहू से रंग गए। यहां पर फेरों पर होने वाली रस्मों और रीति-रिवाजों की परम्परा का प्रतिपादन किया गया है।[5]

'मढ़ी का दीवा' उपन्यास में लोककथा

'मढ़ी का दीवा' नामक उपन्यास में 'रूप बसन्त', 'नल-दमयन्ती' 'जानी चोर', 'पूरन भक्त' की लोककथाओं से कवीवरों की कवीवरी से टोटके तथा छोटी-छोटी घटनाओं का प्रतिपादन किया गया है, ये सभी लोककथाएं या किस्से रौनकी जगसीर को अपना अतीत भुलाने के लिए सुनाता है।

'मढी का दीवा' नामक उपन्यास में जब रौनकी सन्तों को याद कर परेशान हो जाता है तो जगसीर के सामने अपनी व्यथा सुनाता है, तो तब जगसीर भी निक्के की बहू को याद कर अपने अतीत को याद कर परेशान हो जाता है, तब रौनकी जगसीर को कई पुरानी लोककथाओं के किस्से सुनाता है। ताकि जगसीर का ध्यान वहां, से हटकर लोककथाओं की ओर जाए। रौनकी आधी रात तक जगसीर को 'रूप-बसंत', 'जानी चोर', 'नल-दमयंती' तथा 'पूरन भक्त' की लोककथाओं से, कविवरों की कविवरी से टोटके तथा छोटी-छोटी घटनाएं सुनाता रहा। जगसीर को लगा जैसे रौनकी उसे, कीचड़ से निकालकर किसी बहुत दूर की, कल्पित दुनिया में ले गया हो। जो बहुत अद्भुत पर बहुत रोचक थी और उस रात जब वे सोए तो जगसीर को अपना मन शान्त तथा हल्का-हल्का लगा।[6]

'मढी का दीवा' उपन्यास में लोक रीति-रिवाज

'मढी का दीवा' नामक उपन्यास में दो रस्मों को प्रतिपादित किया गया है। पहली रस्म जब लड़के की शादी के बाद बहु की मुँह दिखाई की रस्म और दूसरी जब बहु बुजूर्ग औरतों के पैर दबाने की रस्म निभाती है। 'मढ़ी का दीवा' नामक उपन्यास में जब निक्के की शादी होती है तो उसके दोस्त निक्के को उसकी पत्नी की मुँह दिखाई रस्म के लिए तंग करते हैं, निक्के की माँ को जब पता चलता है तो वो गेबू धीला और जगसीर आदि को मुँह देखने के लिए कहती है तो चले जाओ, वह बैठी है सामने। और साथ ही साथ यह भी कहती है कि तुम खाली हाथ तो नहीं आए?

दोस्तों ने कहा कि फिक्र मत करो ताई, सारा इंतजाम करके लाए हैं। यह देख उसकी मुंह दिखाई। धीले से अंगोछ में बंधे लड्डू दिखाकर कहा और निक्के को गर्दन से पकड़कर आगे धकेलते हुए बोला, 'और यह रहा उसका 'घूग्घू' बजाने के लिए। .... घूग्घू घू ... और वह हंस पड़ा।[7] यहाँ पर लड़के की शादी के बाद उसकी पत्नी के मुंह दिखाई रस्म को प्रतिपादित किया गया है।

'मढ़ी का दीवा' नामक उपन्यास में सूहटी के पांव दबाती है और पांव छूती है तो नन्दी उसे आसीसें देती है जैसे ...'पाय लागूं अम्मा' नन्दी की खाट के पास आते हुए सूहटी बोली। नन्दी ने कहा - जीती रहो। तेरे भाई जीये। भतीजे जीये। सदा सुहागिन हो...। नन्दी ने उसको आसीसें दी।[8] यहाँ नई बहु के द्वारा बुजुर्गो के पैर दबाने और पैर छूने की रीति-रिवाज को प्रतिपादित किया गया है।

फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक कथाएं एवं रीति-रिवाज-

'मैला आँचल' उपन्यास में लोककथा

'मैला आँचल' नामक उपन्यास में चार-पाँच कथाओं का जिक्र किया गया है जैसे तन्त्रिमाटोली में सुरंगा सदाब्रिज की कथा, पुरनियाँ की कथा, शकुन्तला की कथा, सावित्री की कथा और उपन्यासों के ऋषि व मुनियों की कथा। परन्तु कमला उपन्यासों की कथा को अधिक महत्त्व न देकर सावित्री व शकुन्तला की कथा को अधिक महत्त्व देती है। इस उपन्यास में तन्त्रिमाटोली में सुरंगा-सदाब्रिज की कथा होती है। मँहगूदास के घर के पास लोग जमा होते हैं। पुरैनिया टीसन से एक मेहमान आया है। रेलवे में काम करता है।[9] 'मैला आँचल' उपन्यास में डॉ. जब प्यारू से मिलते हैं तो कमला के बारे में पूछते हैं कि वह कैसी है? यह सुनकर कमला की माँ एक ही साँस में उतावली हो जाती है, जब पता चलता है कि प्यारू ने यह कहा कि कमला अच्छी है, तो कमला की माँ खुशी के मारे भरपेट भी नहीं खा सकती है। माँ-बेटी साथ ही खाती है रोज। आज कमला बार-बार टोकती है, 'माँ खाओ भी, पुरैनियाँ की कथा पीछे होगी।... बलैया मेरी किसी का फोटो देखेगी। कमला की माँ जब उपन्यास सुनने लगती है तो कमला कहती है कि माँ शकुन्तला, सावित्री की कथा पढ़ने में मन लगता है, उपन्यासों में पढ़ने से तो ऐसा लगता है कि यह ऋषि-मुनि की कहानी नहीं, जैसे यह हम

लोगों के गांवघर की बात हो।[10] यहाँ एक तो 'पुरैनियाँ' की कथा प्रतिपादित की गई है और उपन्यासों की कहानी से शकुन्तला और सावित्री की कथा को अधिक महत्व दिया गया है। कुल मिलाकर इस उपन्यास में चार-पाँच कहानियों का जिक्र किया गया है।

'मैला आँचल' उपन्यास में लोक रीति-रिवाज

'मैला आँचल' उपन्यास में फणीश्वरनाथ रेणु ने साधुओं को माटी देने की परम्परा और घूंघट की परम्परा जैसी दो रीति-रिवाजों का प्रतिपादन किया है जैसे कि इस उपन्यास में जब महन्थ साहब की मृत्यु हो जाती है, दूर-दूर से अनेक साधु जमा होते हैं, परन्तु उनमें से किसी को भी साधुओं को माटी देने की परम्परा नहीं पता होती है, तभी लक्ष्मी कहती है कि साधुओं को माटी देने की रीत भी नहीं मालूम? जटा बढ़ा लिया और हाथ में कमण्डल ले लिया, हो गए साधु। 'चरनदास! पहले बीजक पाठ होगा, तब माटी! इसके बाद सभी सन्तन के गोर पर माटी दी जाएगी। सबसे पहले रामदास माटी देता है। उसके बाद लक्ष्मी दासिलन मुट्ठी-भर माटी महन्थ साहेब की सफेद चादर देती है फिर फूलों की माला, फिर साधु लोग कुदाली से गोर से माटी भरने लगते हैं।[11] यहाँ पर सन्तों को माटी देने की परम्परा प्रतिपादित की गई है।

इस उपन्यास में एक बार एक औरत की बेटी बीमार (बेहोश) हो जाती है और वह उसे डॉक्टर के पास इलाज के लिए लेकर जाती है वहां पर बहुत औरते घूंघट निकाले हुए खड़ी थी, साथ ही साथ उस लड़की की माँ ने भी घूंघट निकाला हुआ था जब डॉक्टर ने पूछा कि पहले भी यह ऐसे ही कभी बेहोश हुई थी, उसकी माँ ने कहा जी, हाँ दो-तीन बार पहले भी ऐसे हुआ था, फिर कुछ देर बाद डॉक्टर ने पूछा कि पेट? कब्ज तो नहीं? कोई जवाब नहीं देता है घूंघट का ढेखड़ी औरतें के घूंघट आपस में मिलते हैं एक अधेड़ स्त्री आगे बढ़ती है युवती की माँ है 'जी कब्जियत नहीं है।[12] एक दूसरी मरीज युवती को देखा, जो बन्द कमरे में नीली रजाई में लिपटी हुई थी, बाल खुले और बिखरे हुए थे, उसके बारे में। यहाँ पर औरतें की पर्दा प्रथा का प्रतिपादन किया गया है।

'परती परिकथा' उपान्यास में लोककथा

'परती परिकथा' नामक उपन्यास में कुल 6 कथाओं का प्रतिपादन किया गया है, जैसे - सुन्नरि नैका की कथा, शेखचिलिया की कथा, कलात्मक प्रेम की सच्चाई की परीक्षा, हवेली में व्रतकथा, और सुवंश की कथा, साथ ही साथ महाभारत की कथा-उपकथाओं का भी थोड़ा सा जिक्र किया गया है। कुँहुँ ऊँ! हवेली की ओर से सारंगी की आवाज आती है, तभी यह सुनकर मलारी का ध्यान भंग हो जाता है, वह झोपड़ी के अन्दर जाने लगती है, तभी बालगोभिन मलारी को रोकती है और कहती है कि सुन लो मलारी! सभी औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सुन लें। आज हवेली में सुन्नरि नैका की कथा सुनने कोई नहीं जाएगा। सुन लो मिटिंग में पास हुआ है अभी।[13] यहाँ प्रतीत होता है कि हवेली में सुन्नरि नैका की कथा होने वाली है, कथा तो होगी पर मलारी के घर से कोई नहीं जाएगा। लुत्तो का बापू लुत्तो को सोते समय शेखचिलिया की कहानी सुनाता था, परन्तु जब कुछ समय बाद लुत्तो का बापू मर जाता है तो उसकी माँ जब लुत्तो को खाने या दूध पीने के लिए कहती है तो वह मना करता है, तभी उसकी (लुत्तो) की माँ कहने लगती है कि अगर तू खाना नहीं खाएगा या दूध नहीं पीएगा तो तुम्हारा बापू भी भूखा मर जाएगा तभी उसे अपने बापू की जोर से याद आती है क्योंकि वह अपने बापू के साथ सोता था, पीठ पर थपकी देते हुए उसके बापू शेखचिलिया की कहानी सुनाता था।[14] यहाँ खेलचिलिया की कहानी का जिक्र किया गया है।

दीवाना मलारी से प्रेम करता है और मलारी की माँ से प्रेम की भीख माँगता है, भोगेन्द्र बापू इस पर एक कहानी लिखते हैं जिसका नाम है, 'कलात्मक प्रेम की सच्चाई की परीक्षा' और कहते हैं कहानी छपने पर तो दुनिया वाले पढ़ेंगे परन्तु अपने परिवार को पहले ही बता दिया।[15] यहाँ पर प्रतिपादित किया गया है कि भोगेन्दर बाबू एक कहानी के माध्यम से दीवाना की प्रेम कहानी को उजागर करना चाहता है। जितेन्द्रनाथ 'कारन' पीने के बाद एकदम रोमांचित हो जाते हैं, फिर हवेली में 'शंखध्वनि' होती है, क्योंकि वहाँ कोई व्रतकथा होती है। तो वह सोचता है कि आज हवेली में व्रतकथा है। किसी व्रतकथा में कितनी बार शंखध्वनि की जाती है, नहीं मालूम जितेन्द्र को। कहने लगे कि सात दिनों तक हवेली में कोई न कोई व्रतकथा करवाने का प्रोग्राम है, ताजमनी का। ... घन-घन बाजे शंख।[16] इससे ज्ञात होता है कि हवेली में अनेक प्रकार की व्रतकथाएं होती हैं। प्रयागचन्द कहीं मेहमानी चला जाता है। उसके बदले में ललितलाल होता है। किताबों की बँधी-बँधाई गठरी

उठाकर दूसरे कमरे में चला जाता है। शैलेन्द्र हँसकर उसे कहते हैं कि सुवंश-कथा हो रही है। आइए आप भी सुन लिजिए।[17]

'परती परिकथा' उपान्यास में लोकरीति-रिवाज

'परती परिकथा' उपन्यास में फणीश्वरनाथ रेणु ने खैन नामक प्रथा, प्रचलित की थी। कमार, कुम्हार, चमार आदि को खेन देते थे और बदले में साल-भर काम लेते थे। हल के हिसाब से ही सभी किस्म के खैन की दर नियत होती थी। एक हलवाले को अगहनी धान एक मन, भदई एक मन। लेकिन खवाए तो दिन-रात आँगन से लेकर दरवाजे तक का काम करते थे, इसलिए उन्हें ऐसी जमीन दी जाती थी, खा-वास का अर्थ हुआ - खाओ और वास करो।[18] यहाँ पर खैन नामक प्रथा का प्रतिपादन किया गया है। इसके अलावा भी इस उपन्यास में बहु विवाह प्रथा का प्रतिपादन भी मौजूद है । जैसे-लुत्तो जित्तना बाबू से पूछता है कि कोठी की मालकिन आपकी कौन...? लुत्तो को पूछने का हक है। वह पैरवीकार है। जित्तन ने कहा कि वह मेरी माँ थी। हाकिम यह सुनकर चौंक जाते हैं और कहते हैं कि माँ कैसी माँ? जित्तन ने कहा - महोदय! क्षेत्रिय मैथिल ब्राह्मणों में बहु-विवाह की प्रथा थी। मेरे पितामह की पन्द्रह उप-पत्नियाँ थी। पिता जी ने सिर्फ दो...।

'मिसेज रोजउड आपकी सौतेली माँ थी।'

'हाँ! श्रीमती गीता मिश्रा।'[19]

यहाँ पर बहु विवाह प्रथा का प्रतिपादन किया गया है।

बलि प्रथा का प्रतिपादन भी इस उपन्यास में देखने को मिलता है। जैसे - सुबह लोगों ने देखा कि गाँव से पूरब परती पर जित्तन बाबू के नए बाग के पास सैकड़ों खीमे खड़े हुए हैं। एक सफेद नगरी बस नगरी बस जाती है, नाका के सिपाही जी और गाँव के चौकीदार कहते हैं कि डरने की कोई बात नहीं। कोशी वाले साहब लोग चतरा गद्दी में पुल बांधने आए हैं। फिर औरतें प्रश्न उठाती है कि पचास कोस दूर बैठकर भला पुल कैसे बाँधेगे? और पुल बाँधने के पहले तो आदकी की बलि की जरूरत होती है।[20] इस प्रकार इस उपन्यास में बलिप्रथा की प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

'कितने चौराहे' उपन्यास में लोककथा-

'कितने चौराहे' उपन्यास में मनमोहन 'भक्तध्रुव' की कहानी जानता है, और शरबतिया 'बकरचरवाहा' और लकड़सुँधवा की कहानी जानती है, उन दोनों की कहानियों में मटरू मनमोहन की कहानी को ज्यादा महत्त्व देता है। विस्तृत वर्णन इस प्रकार है- जब मनमोहन भक्तध्रुव की कहानी सुनाता है तो किस्सा सुनते-सुनते शरबतिया कई बार रोने-रोने को हुई, लेकिन उसने मन पर काबू पा लिया है। मटरू न जाने कब आकर किस्सा सुनने में मग्न हो जाता है। कहानी समाप्त होने पर मटरू कहने लगा, 'मोहन भैया कितना बढ़िया किस्सा जानते हैं। और तू तो दीदी, बस एक था बकरचरवाहा और एक था लकड़सुँधवा का किस्सा ही जानती हैं। शरबतिया ने कहा कि - 'जा-जा! बकरचरवाहा को बकरचरवाहा का किस्सा न सुनाया जाएगा तो राजा रानी का? शरबतिया मुस्कुराकर मटरू की पीठ पर हाथ फेरने लगी। बहुत दिनों के बाद दीदी इतनी भावुक हुई।[21] यहाँ पर 'भक्त ध्रुव' और बकरचरवाहा का किस्सा कहानी के रूप में प्रतिपादित किया गया है। स्कूल में तमाशा देखने के लिए विद्यार्थियों से भी अधिक शहर के लोग इक्ट्ठे हो जाते हैं, हेडमास्टर साहब इसे देखकर हैरान हो जाते हैं और कहते हैं कि मैंने कल्पना भी नहीं की थी इतने लोग जुड़ जाएंगे। सातों शैतान अब तक होस्टल के एक कमरे में बैठे हुए थे... प्रियोदा पाँच मिनट में 'जलियाँ' वाला बाग के मदनगोपाल की कहानी सुनाकर सभी के सिर पर 'मदनगोपाल' की आत्मा को सवार करवा देती है।[22] यहाँ पर 'जलियांवाला बाग' के मदनगोपाल की कथा प्रतिपादित की गई है ताकि लोगों का ध्यान मदनगोपाल के किस्से की और भटक जाए।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि गुरदयाल सिंह और फणीश्वरनाथ रेणु ने पौराणिक, ऐतिहासिक, उपन्यासों से सम्बन्धित, राजाओं से सम्बन्धित, बुजुर्गो से सम्बन्धित, और पारिवारिक रिश्तों से सम्बन्धित अनेक प्रकार की लोककथाओं का प्रतिपादन किया है, जिसके पढ़ने से व्यक्ति के अतीत का पता चलता है। उपर्युक्त उपन्यासों के अध्ययन के पश्चात् यह भी कहा जा सकता है कि बहुत से ऐसे रिवाज हैं जो पौराणिक कथाओं के आधार पर भी समाज में प्रचलित हो जाते हैं।

संदर्भ :

1. सिंह, गुरदयाल: परसा (पंचकूला: आधार प्रकाशन), पृ. 199-200
2. वही, पृ. 270-271
3. वही, पृ. 284
4. वही, पृ. 14
5. वही, पृ. 94
6. सिंह, गुरदयाल: मढ़ी का दीवा (पंचकूला: आधार प्रकाशन), पृ. 91
7. वही, पृ. 23
8. वही, पृ. 77
9. रेणु, फणीश्वरनाथ: मैला आँचल (नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन), पृ. 64
10. वही, पृ. 304
11. वही, पृ. 49
12. वही, पृ. 59
13. वही, पृ. 155
14. रेणु, फणीश्वरनाथ: परती: परिकथा (नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन), पृ. 257
15. वही, पृ. 286
16. वही, पृ. 293
17. वही, पृ. 304
18. वही, पृ. 36
19. वही, पृ. 160
20. वही, पृ. 223
21. रेणु, फणीश्वरनाथ: कितने चैराहे (नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन), पृ. 36
22. वही, पृ. 61